फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

व्हाट्सएप के जरिये भी अपनी बातें हम तक पहुँचा कर चर्चा का दायरा बढायें। मजदूर समाचार फोन पर पायें और अपने ग्रुपों में भेज कर आदान-प्रदान बढायें। हमारे इस नम्बर पर व्हाट्सएप मैसेज भेजें : 9643246782

नई सीरीज नम्बर 361 जुलाई 2018

निष्क्रीय नहीं हैं। यूरेनियम हैं। नृतक हैं।

अरे भाई सुनो।

लगातार उत्पादन कम से कम लागत में। यह ना हो पायेगा हम इन्सानों से। और ना हो पायेगा धरती में।

रोबोट ले आयेंगे।

और धरती का क्या करोगे? इसको रीप्लेस कैसे करोगे? वो तो जल्दी-ही बिगड़ बैठने वाली है हम इन्सानों पर।

तो अब क्या करें?

तो फिर से शुरू करना पड़ेगा।

किसको फिर से?

यह तहकीकात शुरू करनी पड़ेगी कि इन्सान ने उत्पादन क्यों शुरू किया?

शुरू ही नहीं किया, उत्पादन की रफ्तार भी बढाते आये हैं। यह गतिवृद्धि क्यों?

एक आसान उत्तर है जो हम सब को पता है। प्रकृति पर हावी होना और अपना जीवन बेहतर बनाना।

यह उत्तर आजकल संतुष्ट नहीं कर रहा। पृथ्वी निष्क्रीय नहीं है।

सच। मैं इसको बहुत सोचने की कोशिश करती हूँ कि पृथ्वी निष्क्रीय नहीं है लेकिन इसके आयाम पूरी तरह पकड़ में नहीं आते।

प्रकृति की क्रियायें एक तौर पर महसूस होती हैं। मानसून है। बारिश हुई। पेड़ की छाँव में शान्ति मिली, विश्राम किया। लू ने बेहोश कर दिया। ठण्ड से दाँत किटकिटाने लगे। इन सब से हट कर जब आप पृथ्वी बोल रहे हो तब किन अन्य पहलुओं की बात कर रहे हो?

कोयला। तेल। यूरेनियम। लावा। भूकम्प। इन से विचार शुरू करोगे तो निष्क्रीय शब्द पर सन्देह करोगे।

आप हमें निष्क्रीय शब्द को इतनी गहराई से लेने और विस्थापित करने का निवेदन-सा क्यों कर रहे हैं?

एक समस्या हम सब के सामने तो है ही। एक निरन्तर पीड़ा देने वाला मनोभाव कि हमें निष्क्रीय के तौर पर देखा जाता है। और छटपटाहट है इस बात की कि निष्क्रीय नहीं हैं का रूप-आकार-अभिव्यक्ति कभी-कभी ही मिलती है।

मैं आप लोगों को सुन रहा हूँ। बुरा ना मानें तो एक बात कहूँ। चर्चा रोचक लगती है लेकिन थोड़ी अमूर्त है, निराकार है। हमारे दैनिक जीवन, एक मेहनतकश के जीवन से कैसे जुड़े हैं?

निष्क्रीय शब्द आप दैनिक जीवन में हर वक्त पाओगे। हाल ही में एक फैक्ट्री के 400 परमानेन्ट वरकरों ने एक रोज अपने को गेट बाहर पाया। गुस्सा और अचम्भा। इसके साथ है एक भाव कि हमें निष्क्रीय देखा गया है।

यह तो है। कर लो क्या करना है। श्रम विभाग जाओ। तारीख मिलेगी, आश्वासन मिलेगा। नेताओं के पास जाओ, हिसाब की बात शुरू हो जायेगी। पी एफ के वहाँ जाओ तो "हाँ जी हम जाँच करेंगे।" और अपने बीच में एक हड़बड़ाहट होगी, बेचैनी होगी, और सिकुड़न।

और तन्त्र सोचता है कि उसको नहीं पढा जा सकता।

उसके छद्म थक चुके हैं। और आप यह कह सकते हो कि हम सब ने उसे थका दिया है। राजा नंगा है। आपको पता है क्या कि शिशु को ही सबसे पहले राजा नंगा दिखा था। शिशु को ही क्यों दिखा?

विगत के बोझ के पराधीन नहीं था। जैसा सामने दिखा, वही बोला।

आप यह कह रही हो कि तन्त्र का हमें निष्क्रीय देखना उसका एक छद्म है। एक बहाना है। स्वांग है।

फैल जाओ दोस्त। बिखरने को रोकना फैलने से होगा। सब के मन में, सब की कहानी में, सब के दिमाग में, सब की सोच में घुस जाओ।

आप फिर से निराकार हो गये। आप यह कह रहे हो कि 400 लोग कम नहीं हैं। छोटे-छोटे ग्रुपों में फैल जायें। दूसरी फैक्ट्रियों के गेटों पर काम शुरू होने के वक्त, लन्च के समय, काम खत्म होने के समय, चाय की दुकानों पर, पड़ोस के अड्डों पर एक हफ्ते में ही लाखों के बीच फैला दो। इसमें कोई तौहीन नहीं है। यूरेनियम हो।

हा-हा ! तन्त्र डरता है। और आप सदैव वे नृतक हो जो छद्म को भेद देते हो।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद - 121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

बहुत कमजोर हैं कम्पनियाँ

सन् 1992 में जापान में मैनेजमेन्टों के बीच टेम्परेरी और परमानेन्ट मजदूर रखने पर चर्चायें हुई थी। तब यह बातें उभर कर आई थी :

1) टेम्परेरी वरकर सस्ते पड़ते हैं लेकिन उनकी कम्पनी के प्रति कोई भी वफादारी नहीं होती। यह स्थिति बहुत खतरनाक है।

2) परमानेन्ट मजदूर महँगे पड़ते हैं लेकिन उनकी कम्पनी के प्रति कुछ वफादारी होती है। कम्पनी की सुरक्षा के लिये परमानेन्ट मजदूर रखना बहुत महत्वपूर्ण है।

3) कम्पनियों द्वारा परमानेन्ट मजदूर रखना मुश्किल होता जा रहा है। यह उनके बस से बाहर की बात होती जा रही है।

इन 25 वर्षों में दुनिया-भर में परमानेन्ट मजदूरों की सँख्या तेजी से घटी है और टेम्परेरी वरकरों की तादाद बहुत गति से बढी है। कम्पनियों की दो कैटेगरी बनी हैं : 1) बहुत कमजोर ; 2) बहुत-ही कमजोर।

✶**बॉलहोफ फास्निंग** (771उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव) फैक्ट्री में मारुति सुजुकी वाहनों के सॉकेट 500 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में बनाते हैं। सब वरकर टेम्परेरी हैं। स्टाफ के लोग ही परमानेन्ट हैं। ई एस आई तथा पी एफ किसी मजदूर की नहीं हैं। तनखा बहुत देरी से : अप्रैल का वेतन 29 मई को दिया था और मई की तनखा 28 जून तक नहीं दी थी। छोड़ने पर वरकर के दो महीने के पैसे फँस जाते हैं।

✶**ए ए ऑटोटेक** (157-58 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में स्टाफ के लोग ही परमानेन्ट हैं। सब मजदूर , 1000-1200 वरकर दस-बारह ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे हैं। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। सैलेरी स्लिप में ओवर टाइम नहीं दिखाते। फैक्ट्री में होण्डा, मारुति सुजुकी, बी एम डब्लू कारों और हीरो तथा होण्डा दुपहियों के पार्ट्स बनते हैं। वरकर अपनी शिफ्ट में पहुँचा लेकिन लोग ज्यादा हो गये तो वापस भेज देते हैं और कम पड़ने पर जबरन 24 घण्टे रोक लेते हैं। महीने में 170-180 घण्टे ओवर टाइम, नींद ही पूरी नहीं होती। स्टाफ वाले दुर्व्यवहार करते हैं। खान-पान में भी दुभान्त : 12 घण्टे की शिफ्ट में स्टाफ को तीन बार चाय लेकिन मजदूरों को कम्पनी एक कप चाय भी नहीं देती; स्टाफ का खाना अलग और वरकरों का भोजन खराब। आठ महीने पहले खाने और चाय के मसले पर एक रोज सब मजदूर फैक्ट्री के बाहर गेट पर बैठे थे। कम्पनी मजदूरों को वार्षिक बोनस नहीं देती है।

✶**सेशासाई प्रिन्टिंग प्रैस** (बी-204, 205 ओखला फेज-1, दिल्ली) में स्टाफ के लोग ही परमानेन्ट हैं। एक ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 400 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। मात्र 10-15 वरकरों की ही ई एस आई तथा पी एफ हैं। दो सौ मजदूर 8 घण्टे के 300 रुपये की दिहाड़ी पर हैं, उन्हें साप्ताहिक अवकाश नहीं।

✶**ईको कैट** (20/4 मथुरा रोड़, फरीदाबाद) फैक्ट्री में स्टाफ के लोग ही परमानेन्ट हैं। तीन ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 300 से ज्यादा वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में टाटा, आयशर, महिन्द्रा वाहनों के साइलैन्सर बनाते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कैन्टीन में कुछ बनता नहीं है, 12 घण्टे में 3 चाय और 2 समोसे बाहर से मँगा कर कम्पनी देती है। मजदूरों को बोनस नहीं देते, दिवाली पर मिठाई और लिफाफे में 250 रुपये। झपकी पर ओवर टाइम के पैसे खत्म और साहब लोग हर समय धमकी देते रहते हैं।

✶**इन्टरनेट एक्सपोर्ट** (202 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में 10-15 परमानेन्ट मजदूर हैं और उन्हीं की ई एस आई तथा पी एफ हैं। दो ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 100 वरकरों की ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं, तनखा कैश, महीने में 150 घण्टे ओवर टाइम जिसका भुगतान सिंगल रेट से भी कम के हिसाब से।

✶**विक्टोरा ऑटो** (472 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में स्टाफ के लोग ही परमानेन्ट हैं। चार ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 200 वरकर दिन में साढे दस घण्टे और रात को 11 **(बाकी पेज तीन पर)**

कानून के राज में असंगत हो गये हैं कानून

बेगार के दौरान मनमर्जी का कानून था। खरीदने-बेचने के लिये कानून का राज माफिक है। व्यापारियों ने कानून के राज का झण्डा बुलन्द किया जिसे फिर कारखानेदारों ने थाम लिया। कानून का राज स्थापित करने के लिये कहीं राजा का सिर काटा गया तो कहीं पराजीत होने पर राजा-रानी को कानून के राज में मुखिया बनाया गया।

इधर काफी समय से खरीदना-बेचना ही नाकारा होता गया है। ऐसे में घोषित तौर पर अब भी कानून का राज है लेकिन व्यवहार में कानून असंगत हो गये हैं। आज कानूनों का उल्लंघन व्यापक है और कानूनों का पालन अपवाद है। कानून के राज का एक स्तम्भ, कम्पनियाँ कानूनों को बड़े पैमाने पर तोड़े बिना चल ही नहीं सकती।

✶**फैब्रिक चेजर हौजरी** (214 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में 100 वरकर 10 घण्टे की शिफ्ट में हैं, पीस रेट पर हैं, ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। फिनिशिंग में 150 वरकरों का महीने में 50-60 घण्टे ओवर टाइम, पेमेन्ट सिंगल रेट से।

✶**ऋचा ग्लोबल** (3 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 500 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में और 18 घण्टे भी रोक लेते हैं। कम्पनी द्वारा स्वयं रखे वरकरों को 2 घण्टे ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से और बाकी घण्टों के सिंगल रेट से। एक ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 150 मजदूरों को पूरे ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। छोड़ने पर 10-15 दिन किये काम के पैसों के लिये ठेकेदार कम्पनी टरकाती रहती है।

✶**सोनू एग्जिम** (बी-5/3 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में 3 मार्च 2017 से लागू नया ग्रेड नहीं देने पर 23 मई 2018 को मजदूरों ने फिर चक्का जाम किया। उत्पादन बन्द रहने पर 31 मई को पुलिस फैक्ट्री से 4 मजदूरों को पकड़ कर ले गई। फैक्ट्री से सब वरकर ओखला थाने पहुँचे। चारों को पुलिस ने छोड़ दिया। मजदूर फैक्ट्री लौटे तो गेट पर ताला लगा मिला। और फिर, एक यूनियन नेता के फेर में 155 मजदूरों का हिसाब हो गया।

✶**गुलाटी फैब्रिकेशन** (139 सैक्टर-24, फरीदाबाद) फैक्ट्री में हैवी जॉब होती है और कम्पनी जूते तक नहीं देती। गम्भीर एक्सीडेन्ट के बाद ड्रामा : हैल्मेट पहनो, साइज बताओ जूते लायेंगे। और दो-तीन दिन बाद ड्रामा खत्म। महीने में 100-130 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान डेढ की दर से। मजदूरों को कम्पनी एक कप चाय भी नहीं देती। डायरेक्टर फैक्ट्री में घूमता ही रहता है और टोकता बहुत है।

✶**क्यू एच टालब्रोस** (400 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव) फैक्ट्री में तीन ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 200 वरकरों का महीने में 100 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से।

✶**वीयरवेल** (बी-134 ओखला फेज-1, दिल्ली) फैक्ट्री गेट पर 30 मई के बाद भी कम्पनी ने कोई नोटिस नहीं लगाया। दस-पन्द्रह साल सर्विस वाले वरकर हैं, 9 जून को श्रम आयुक्त, दिल्ली सरकार से मिले तो साहब बोले कि फैक्ट्री खुलवायेंगे, बैठे दिनों की सैलेरी दिलवायेंगे, 10 जुलाई तक कम्पनी बैंक खातों में वेतन नहीं भेजती है तो मेरे पास आना। वीयरवेल कम्पनी ने मजदूरों की 6 महीने की पी एफ राशि जमा नहीं की है लेकिन इस बारे में 12 जून को वरकर पी एफ ऑफिस गये तो वहाँ अधिकारी बोले कि जमा किया है अथवा नहीं की जाँच करवायेंगे, फिर कार्रवाई करेंगे, 20 दिन का समय दो। कुछ वरकर एक यूनियन लीडर की बात कर रहे हैं लेकिन दूसरे वरकर इसी नेता द्वारा 10-12 वर्ष पहले **धीर इन्टरनेशनल** फैक्ट्री के 450 मजदूरों का हिसाब करवाने की बात बताते हैं।

✶**सिग्मा मोल्डिंग** (149-50 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। जनवरी से अप्रैल के महँगाई भत्ते की बकाया राशि मजदूरों को नहीं दी है।

✶**गुड़िया इन्टरप्राइजेज** (सी-69/1 ओखला फेज-2, दिल्ली) में हैल्पर को 11 घण्टे रोज ड्युटी पर 26 दिन के 7000 रुपये। प्रैसमैन 8 घण्टे के 200 रुपये की दिहाड़ी पर। ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं।

बात लेने की है

दिल्ली में न्यूनतम वेतन

कोई कम्पनी देती नहीं। कोई नेता दिलवाता नहीं। कोई मन्त्री-अफसर कानून लागू नहीं करवाता। लेना होता है। मजदूर लेते हैं।

फरीदाबाद में **शाही एक्सपोर्ट** गारमेन्ट्स फैक्ट्रियों में अधिकतर मजदूर महिला हैं और यहाँ वरकर ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से तथा बोनस बीस प्रतिशत लेते हैं, बोनस में ढाई महीने की तनखा लेते हैं। फरीदाबाद में **गुडईयर टायर, एस्कोर्ट्स, व्हर्लपूल, जे सी बी, यामाहा** और गुडगाँव-आई एम टी मानेसर में **मारुति सुजुकी, होण्डा** फैक्ट्रियों में परमानेन्ट मजदूर महीने में पचास हजार से एक लाख रुपये लेते हैं। इन मजदूरों से न्यूनतम वेतन की बात कोई नहीं करता। लेकिन यहाँ हम दिल्ली में 3 मार्च 2017 से लागू न्यूनतम वेतन की बात करेंगे।

नये ग्रेड की घोषणा के साथ ही दिल्ली में मजदूरों ने इन्हें लागू करवाने के लिये कम्पनियों पर अनेकानेक प्रकार के दबाव डालने आरम्भ किये। यहाँ इस एक वर्ष के दौरान मजदूर समाचार में जिन कार्यस्थलों पर नया ग्रेड लागू करवाने में वरकर सफल रहे हैं की बातें हैं वे देखें।

✶**ए डी विक्टोरिया गारमेन्ट्स** (एफ-23/3 ओखला फेज-2) फैक्ट्री में अरजेन्ट माल चल रहा था। रोज सुबह साढे नौ से रात 9 बजे तक 300 मजदूर काम कर रहे थे। अप्रैल 2017 की तनखा बैंक में भेजे जाने से पहले, 5 मई 2017 को वरकरों ने साँय 6 बजे मशीनें बन्द कर दी और फैक्ट्री में बैठ गये। चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर तत्काल फैक्ट्री पहुँचा था। नया ग्रेड लागू किया और 3 मार्च से एरियर भी दिया।

✶ **कैपिटल रेडियो** (बी-6/4 ओखला फेज-2) फैक्ट्री में मजदूरों ने अप्रैल 2017 की तनखा नये ग्रेड अनुसार ली और 3 मार्च से एरियर भी लिया।

✶ दिल्ली में ड्युटी कर रहे **ग्रुप फोर (जी 4 एस)** गार्डों ने नया ग्रेड 3 मार्च 2017 से एरियर के साथ लिया। दिवाली 2017 पर बोनस भी ग्रुप फोर गार्डों ने नये ग्रेड अनुसार लिया।

✶**चाँदीवाला अस्पताल** (कालकाजी) के वरकर सितम्बर 2017 में इक्ठे हो कर नये ग्रेड के लिये मैनेजमेन्ट के पास गये। साहबों ने फिर वही केस-तारीख की बातें की। लेकिन 11 अक्टूबर को सितम्बर की तनखा बैंक खातों में पहुँची तो तनखा 3 मार्च से लागू ग्रेड के अनुसार थी।

✶ मायापुरी औद्योगिक क्षेत्र में **पर्ल इंजीनियरिंग** (बी-95 मायापुरी फेज-1) फैक्ट्री में मजदूरों ने 3 मार्च 2017 से लागू नया ग्रेड ले लिया।

✶ दिल्ली सरकार की **ओरेंज बसों** के कण्डक्टरों-ड्राइवरों ने मई 2017 में बसों के चक्के जाम किये तब उन्होंने 3 मार्च 2017 से लागू न्यूनतम वेतन लिये।

✶**ऐलोरा** (ए-3 ओखला फेज-1) चश्में बनाने वाली फैक्ट्री में मजदूरों ने नया ग्रेड तथा 3 मार्च 2017 से एरियर लिया।

✶**हुन्दई शोरूम-वर्कशॉप** (ए-30 मोहन कोऑपरेटिव इस्टेट) में कार्यरत 200 वरकरों ने नया ग्रेड तथा 3 मार्च 2017 से एरियर लिया।

✶**बुटीक गारमेन्ट्स** (डी-72 ओखला फेज-1) फैक्ट्री में एक रोज सब वरकर बैठ गये। मैनेजमेन्ट ने नया ग्रेड देने की घोषणा की तब मजदूरों ने उत्पादन आरम्भ किया। बुटीक वरकरों ने 3 मार्च 2017 से एरियर भी लिया।

✶**डी एच एल कूरियर** (सी-40 ओखला फेज-2) कम्पनी के 200 वरकरों ने जनवरी 2018 की तनखा नये ग्रेड अनुसार ली और 3 मार्च 2017 से एरियर भी लिया।

✶**प्रोन्क मल्टी सर्विस** (बी-90 ओखला फेज-2) वरकरों ने जुलाई 2017 से नया ग्रेड लिया।

✶**एयरटेक इलेक्ट्रोनिक्स** (बी-70 ओखला फेज-2) फैक्ट्री वरकरों ने जून 2017 से नया ग्रेड लिया और फिर दिवाली 2017 पर बोनस भी नये ग्रेड अनुसार लिया।

✶डी-28 ओखला फेज-1 स्थित गारमेन्ट फैक्ट्री मजदूरों ने जून 2017 से नया ग्रेड लिया और 3 मार्च 2017 से एरियर लिया।

साझेदारी

✶आई एम टी मानेसर, उद्योग विहार गुड़गाँव, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, नोएडा, फरीदाबाद में मजदूर समाचार का वितरण हर महीने होता है।

✶ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान फुरसत से बातचीत मुश्किल रहती है। इसलिये मिलने-बातचीत के लिये पहले ही सूचना देने का सिलसिला आरम्भ किया है। चाहें तो अपनी बातें लिख कर ला सकते हैं, चाहें तो समय निकाल कर बात कर सकते हैं, चाहें तो दोनों कर सकते हैं।

— मंगलवार, 31 जुलाई को सुबह 6 बजे से 9½ तक आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 में बिजली सब-स्टेशन के पास मिलेंगे। खोह गाँव की तरफ से आई एम टी में प्रवेश करते ही यह स्थान है। जे एन एस फैक्ट्री पर कट वाला रोड़ वहाँ गया है।

— उद्योग विहार, गुड़गाँव में फेज -1 में पीर बाबा रोड़ पर वोडाफोन बिल्डिंग के पास सोमवार, 30 *जुलाई* को सुबह 7 से 10 बजे तक बातचीत के लिये रहेंगे। यह जगह पेड़ के नीचे चाय की दुकान के सामने है।

— बुधवार, 1 अगस्त को सुबह 7 से 10 बजे तक चर्चा के लिये ओखला-सरिता विहार रेलवे क्रॉसिंग (साइडिंग) पर उपलब्ध रहेंगे।

✶ फरीदाबाद में जुलाई में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

फोन तथा व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782

ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

मजदूर समाचार में योगदान

- ✶ अपने कदम और अपने साथियों के कदमों की जानकारियाँ सामुहिक करें।
- ✶ चर्चाओं में योगदान के लिये बाँटने वालों से प्रतियाँ ले जायें।
- ✶ फुर्सत मिले तो किसी भी रविवार को मजदूर लाइब्रेरी में आ कर विस्तार से जीवन चर्चा करें।
- ✶ आर्थिक सहयोग का मन हो तो जरूर दें। ज्यादा से ज्यादा छपने की क्षमता वाद-विवाद को फैलायेगी। इस योगदान में कोई भी राशि कम नहीं है।
- ✶ व्हाट्सएप पर खुल कर मैसेज भेजिये, हम जम कर पढ रहे हैं और बातों को फैला रहे हैं।
- ✶ आज मजदूर समाचार के पाठक अखबार में कविता, फलसफा, दर्शन, साहित्य और ज्ञान-चर्चा के विभिन्न रूप का आनन्द ले रहे हैं। आनन्द को उल्लास में बदलिये।

बहुत कमजोर हैं कम्पनियाँ......(पेज दो का शेष)

घण्टे की शिफ्टों में। जनवरी से देय महँगाई भत्ता मई की तनखा में नहीं दिया। भर्ती के समय ऑपरेटर को तनखा 12 हजार रुपये बताते हैं और फिर देते 11 हजार हैं।

✶**नीति क्लोथिंग** (218 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में प्रोडक्शन में ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 300 टेलरों की ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं, तनखा नगद। फिनिशिंग वरकरों की ई एस आई तथा पी एफ हैं, चेक **विक्की गारमेंट्स** के नाम से, महीने में 100 घण्टे तक ओवर टाइम जिसका भुगतान सिंगल रेट से। चार मंजिल पर चार फिनिशिंग हैं और वरकर का चार महीने बाद हिसाब कर देते हैं।

✶**लुमैक्स डी के** (135 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 20-25 परमानेन्ट मजदूर हैं और उनकी यूनियन है, 8-8 घण्टे की शिफ्ट हैं। तीन ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 500 वरकर 12 घण्टे की शिफ्ट में — मोल्डिंग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट और बाकी विभागों में दिन की 12 घण्टे की शिफ्ट। पे-स्लिप में ओवर टाइम दिखाते नहीं। दुगुनी दर से भुगतान की बजाय ओवर टाइम की पेमेन्ट सिंगल रेट से। टेम्परेरी वरकरों को बोनस नहीं देते — दिवाली पर मिठाई तथा उपहार ही।

पहचान की राजनीति के पार फ्रेमिंग

मैं कौन हूँ ? हम कौन हैं ? यह प्रश्न मन-मस्तिष्क में उठते ही रहते हैं।

एक परिस्थिति और काल में जो मान्य थे वे दूसरी परिस्थिति तथा काल में अमान्य हो जाते हैं। मान्य से अमान्य का यह सिलसिला चलता रहा है। विगत में जो मान्य थे और फिर अमान्य हो गये उन्हें पकड़े रहना भारी दुख-दर्द लिये है।

छह सौ-क वर्ष पहले वे परिस्थितियाँ उभरी जिनमें नये मान्य व्यापक स्तर पर एक अनिवार्य आवश्यकता बनने लगे। तेजी से फैल कर यह परिस्थितियाँ विश्व-व्यापी बनी। नये मान्य के ताण्डव के विरोध में पृथ्वी के चप्पे-चप्पे पर लोगों ने अपने उस समय के इस-उस मान्य के आधार पर जीवन-मरण का संघर्ष किया। लेकिन क्षेत्र-विशेष में जो मान्य था वह नई वैश्विक परिस्थिति में अमान्य हो गया था, विगत का मान्य हो गया था। ऐसे में नई परिस्थिति के खिलाफ लोगों के संघर्ष बदहवासी वाले संघर्ष बने। और खरीदना-बेचना, मण्डी-मुद्रा, रुपये-पैसे दुनिया-भर में स्थापित हुये, हावी हुये।

फिर दो सौ-सवा दो सौ वर्ष पहले नई परिस्थिति का उदय हुआ तथा यह और भी तेजी से विश्व-व्यापी बनी। उत्पादन में मजदूर का, वेज वरकर का जन्म हुआ। और इधर हमारे सम्मुख वैश्विक मजदूर, ग्लोबल वेज वरकर हैं।

अपनी युवावस्था में ही, सन् 1850 आते-आते ही मजदूरों ने स्वयं को नये मान्य के वाहक होने का उद्‌घोष कम्युनिस्ट घोषणापत्र में किया। ऊँच-नीच, मण्डी-मुद्रा, रुपये-पैसे, मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन को अमान्य करार दिया। मैं कौन हूँ ? हम कौन हैं? सम्पूर्ण मानव योनि को बाहों में लेने, पूरी पृथ्वी को गले लगाने की दिशा में कदम उठे।

हावी मान्य को अमान्य कर नये मान्य की रचना की तरफ अग्रसर मजदूरों ने जो था उसे अधिकाधिक कमजोर किया। क्षेत्रीय स्तरों पर हावी मान्य की बढती लड़खड़ाहटें इन पचास वर्षों में हावी मान्य की वैश्विक लड़खड़ाहटें बन गई हैं।

ऐसे में अधिकाधिक नाकारा होती, अधिकाधिक हानिकारक होती, पृथ्वी पर जीवन को दाँव पर लगाती मान्य को बनाये रखने के लिये पहचान की राजनीति विश्व-भर में सक्रिय है। विगत की इस-उस मान्य अथवा वर्तमान में हजारों पहलुओं में से दो-चार को छाँट कर पहचान की राजनीति फ्रेमिंग करती है। देश, धर्म, रंग, जाति, लिंग, क्षेत्र, भाषा, संस्कृति, इतिहास, लोकल-बाहरी आदि के आधार पर फ्रेमिंग पहचान की राजनीति कर रही है। वर्तमान में मैं-हम के प्रश्न पहचान की राजनीति की चपेट में आ कर वीभत्स ताण्डवों को भी उभार रहे हैं।

सन् 1848 में ऊँच-नीच, शोषण, वर्गों की समाप्ति और साम्यता की रचना के लिये कम्युनिस्ट घोषणापत्र में समाज को, समाज की गतिक्रिया को वर्गों तथा वर्ग-संघर्ष की फ्रेमिंग में देखा-पढा गया। इस सन्दर्भ में उपमहाद्वीप की कुछ बातें विचारणीय हैं। यहाँ ऊँच-नीच, शोषण, वर्ग उभरने के समय उन्हें बनाये रखने के लिये वर्ण की, चार वर्ण की फ्रेमिंग की गई थी। विगत की गण-गोत्र (जाति), कबीला, क्लान, ट्राइब की समता के विरुद्ध उभरे वर्ग समाज (स्वामी समाज) को बनाये रखने के लिये वर्ण वाली फ्रेमिंग थी। महाद्वीप में एक तो गण-गोत्र (जाति) का पेशों से घुलमिल कर दीर्घकाल तक प्रभावशाली बने रहना और फिर पहचान की राजनीति ने जटिल उलझनें उत्पन्न की हैं। वर्ण (वर्ग) चार लेकिन गण (जाति) हजारों हैं। प्रत्येक वर्ण में अनेकों गण (जाति) हैं। और फिर, वर्ण (वर्ग) की गण (जाति) से गडमड प्राचीन सभ्यता के काईयापन को नई उँचाइयों पर ले जा रही है।

दैनिक जीवन में जो हो रहा है, विशेषकर घटना-रूप में जो होता है, उसे देखने-पढने के लिये पहचान की राजनीति से परे की, पार की फ्रेमिंग अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस सन्दर्भ में मजदूर समाचार के जनवरी 2017 अंक में ''प्रश्न-उत्तर'' के रूप में एक प्रयास है जिसे यहाँ फिर से छाप रहे हैं। आवश्यकता कम से कम के तौर पर पृथ्वी को लेने की है लेकिन यहाँ मानव योनि तक सीमित रहे हैं।

प्रश्न–उत्तर

✶मैं कौन हूँ ?

मैं सात अरब का एक अंश हूँ।

✶मेरे पूर्वज कौन हैं ?

सात अरब के पूर्वज मेरे पूर्वज हैं।

✶मेरे वारिस कौन होंगे ?

आशावान हूँ कि सात अरब के वारिस मेरे वारिस होंगे।

✶क्या यह सात अरब सब एक जैसे हैं ?

नहीं। सात अरब में कई सामाजिक समूह हैं जैसे किसान, दस्तकार, दुकानदार, मैनेजमेन्ट, मजदूर।

✶तो फिर, मजदूरों पर ही ध्यान केन्द्रित क्यों ?

इन दो सौ वर्षों में मजदूरों का ही वह सामाजिक समूह है जो एक छोटे-से क्षेत्र में उत्पन्न हो कर पूरी पृथ्वी पर उपस्थित हो गया है। जबकि, किसानी-दस्तकारी की सामाजिक मौत और सामाजिक हत्या तीव्र से तीव्रतर हुई है।

✶क्या ज्यादा सँख्या में हैं इसलिये मजदूर महत्वपूर्ण हैं ?

नहीं। विश्व में ज्यादा सँख्या में तो मजदूर इन पच्चीस-तीस वर्ष में हुये हैं। उत्पादन में मजदूरों द्वारा दस्तकारों की जगह लेना आरम्भ होने के समय से ही मजदूरों पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता पैदा हो गई थी। दो सौ वर्ष से संसार में मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन सम्पूर्ण सामाजिक प्रक्रिया की धुरी बना है।

✶तो फिर, मजदूरों पर ध्यान केन्द्रित करने के कारण क्या हैं ?

मजदूरों में दो महत्वपूर्ण बातें संग-संग रहती हैं। एक है मजदूरों का बेचारे, असहाय, दमन, शोषण के शिकार होना। दूसरी है मजदूरों का होना ही उन्हें हर प्रकार की उँच-नीच, भेदभाव, दमन, शोषण से जूझने में ले जाता है। मजदूरों का बेचारगी वाला पहलू भलेमाणसों की दया भावना को उभारता है और काँइयाँ लोगों को आसान शिकार की तरह आकर्षित करता है। जबकि, मजदूरों का होना ही उन्हें जो है उसका विरोध करने के संग-संग नये सम्बन्धों को बनाने, नित नई रचनाओं के प्रयासों में लगाता है। सार है : कोई मजदूर हो ही क्यों ? और, मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन के स्थान पर क्या ? विशेषकर फैक्ट्री मजदूर सामूहिक तौर पर समाधान की प्रक्रिया में रहते हैं।

✶आज स्थितियाँ कैसी हैं ?

मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन की सामान्य प्रक्रिया ही पृथ्वी पर जीवन को दाँव पर लगा रही है। और, मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन विश्वव्यापी बनने के संग अधिकाधिक नाकारा हो गया है तथा अधिकाधिक लड़खड़ा रहा है। मजदूर, वैश्विक मजदूर, ग्लोबल वेज वरकर कब्र खोद चुके हैं और दफनाने की प्रक्रिया में होने के संग-संग नई रचना की भूमिका में हैं।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया। **RN 42233**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।